No. of Printed Pages : 5

पी.जी.डी.टी.-001

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

03676

जून, 2018

पी.जी.डी.टी. - 001 : अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अनुवाद की भारतीय परम्परा पर प्रकाश डालिए। **20**

अथवा

'किसी भी समाज एवं संस्कृति के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

2. 'कोश, अनुवाद के अनिवार्य उपकरण हैं।' इस कथन के प्रकाश में कोशों के प्रकार बताते हुए अनुवाद कार्य में उनकी उपयोगिता सिद्ध कीजिए। **20**

अथवा

अनुवाद - प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

3. **किन्हीं दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : **2x10=20**

(क) अनुवाद का सामाजिक - सांस्कृतिक संदर्भ

(ख) अनुवाद में समतुल्यता का सिद्धान्त

(ग) अननुवाद्यता

(घ) अनुवाद के प्रकार

4. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के हिन्दी समतुल्य लिखिए : 5x2=10

(क) Familiarity breeds contempt

(ख) Mills of Gods grind slowly

(ग) To be down on something

(घ) To bear examination

(ङ) Early birds catch the worm

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : 10

(क) जिस अनुवाद में मूल पाठ की छाया मात्र हो, वह _____ कहलाता है।

(ख) शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' नाटक का अनुवाद _____ ने 'दुर्लभ बंधु' के नाम से किया है।

(ग) शाब्दिक - अनुवाद को _____ भी कहा जाता है।

(घ) भावानुवाद में वस्तुतः अनुवादक _____ का अनुवाद करता है।

(ङ) जिन पाठों का उद्देश्य सूचना देना होता है, वहाँ पर _____ अनुवाद उपयोगी सिद्ध होता है।

अथवा

निम्नलिखित शब्दों को कोशक्रम में लिखिए :

fraud	रक्षक
feature	रात्रि
fragmant	रंजन
fantastic	रुधिर
fishing	रिवाज़
fracture	रिक्शा
frog	रंगीन
fresh	रुक्का
freeze	रौख
frightening	रौनक

6. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

The manuscript, Tarikh-i-Khandan-i-Timuria is important in being the pioneer of firsthand account of Central Asian. Timurids written under the aegis of the greatest of Indian Timurids, Akbar. It is also important as the first Indian account of Central Asia.

The unique manuscript is preserved in Khuda Bakhsh Oriental Library, Patna. No other copy of the work is known to be available in any known collection of the world. It is important for historians of Central Asia as also for the Chugtai/ Mughal India. It is also important for its rare paintings, representing a superb blending of Indian and Central Asian Art. In fact the manuscript is better known, all the World over, for its paintings, as these are related to the climax of Indian art.

अथवा

The single reference in the Ramayana to which I made a reference above is to my mind very significant. We are told that when Kaushalya learnt of Rama's exile, she fainted and fell down on the floor and her body was covered with dust. But if this floor was made of brick or made with stones, as the palaces are supposed to be, how or why there should be dust on the floor ? I think this small, insignificant detail, overlooked by the poet, possibly gives us a clue to the real nature of the original house at Ayodhya. These houses, though big, should be of mud or mud-brick, as have been exposed in our excavations outside the Indus Civilisation. These houses might have had a stone plinth, as at Ahar and Somnar, if stone was easily available.

7. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10

यह उल्लेखनीय है कि भारतीय पुस्तकों के अनुवादों ने अरबी संस्कृति को जितना प्रभावित किया उससे कहीं ज़्यादा अरबी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। इसका कारण यह था कि मुसलमान भारत में विजेताओं के रूप में आए और यहाँ आकर बस गए। उनके आने के बाद अरबी और फारसी भाषा और साहित्य का वर्चस्व भारत में लम्बे समय तक कायम रहा। अरबी और फारसी के अनेक ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। अरबी और फारसी भाषाएँ भारत में शासकीय भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हुई। उनके प्रभाव से भारतीय भाषाओं के स्वरूप में परिवर्तन आया।

पश्चिमी देशों के साम्राज्यवादी प्रसार ने भी भारतीय संस्कृति और यहाँ की भाषा तथा साहित्य को बहुत प्रभावित किया। साम्राज्यवाद के प्रसार के साथ संस्कृति के विश्वव्यापीकरण का युग शुरू हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृति के इस विश्वव्यापीकरण में तेजी आई और अनुवाद का महत्व बहुत बढ़ गया।

अथवा

विजयनगर प्रशासन में सिंचाई का कोई विभाग नहीं था। केवल व्यक्तिगत प्रयासों के द्वारा सिंचाई साधनों का विकास किया जाता था। सिंचाई के साधनों के विस्तार में मंदिरों, मठों, व्यक्तियों और संस्थानों ने समान रूप से योगदान किया। सिंचाई के साधनों का विस्तार पुण्य - कर्म माना जाता था और सिंचाई के साधनों के विकास या सुधार करने वालों को राज्य कर मुक्त भूमि प्रदान कर देता था। विजयनगर युग में तड़ागों, बाँधों और नहरों को मुख्यतया सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाता था। नदी पर बाँध बनाकर नहरे निकाली जाती थी। इस प्रकार की नहरों

के उपयोग का सबसे अच्छा दृष्टांत हम साम्राज्य की राजधानी विजयनगर में पाते हैं। इसी प्रकार साम्राज्य के विभिन्न भागों में बड़े-बड़े तालाबों का भी निर्माण करवाया गया था। अभिलेखों में पुराने तालाबों के विस्तार, उनकी मरम्मत एवं नवीन तालाबों के निर्माण के सैकड़ों प्रमाण मिलते हैं।